ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

निराला के काव्य में अजनबीपन का बोध

Understanding Alienation Through the Poems of Nirala

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 27/01/2021, Date of Publication: 28/01/2021

गरिमा त्रिपाठी
शोधार्थी,
हिंदी भवन, विश्व-भारती,
शान्तिनिकेतन बीरभूम,
पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश

अजनबीपन आधुनिक युग की सबसे ज्वलंत समस्याओं में से एक है। व्यक्ति सदैव अपने अस्तित्व बोध से परे गतिशील रहने के कारण अपने वर्तमान से विछिन्न होने की प्रक्रिया में रहता है। उसकी महत्वाकांक्षाए असीम हैं, वह वतर्मान में रहते हुए भी भविष्य की ओर अग्रसर है। अपनी सम्भावनाओं, महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए उसके कदम अपने वर्तमान परिवेश से कटकर, उनसे अलग होकर ही आगे बढ़ते हैं। अपने परिवेश अपनी स्थिति से कटकर अजनबी हो जाना, अपने लोगों से कटकर अकेला हो जाना मानवीय अस्तित्व की प्रमुख समस्या बनी हुई है। जिसका अवलोकन हम निराला के काव्य के माध्यम से करेंगे।

Alienation is one of the most burning problems of the modern era. A person is always in the process of being disconnected from his present due to moving beyond his realization. His ambitions are limitless, he is currently moving towards the future. In order to fulfill his possibilities, ambitions, his steps cut off from his present environment, moving away from them. Being alienated from their surroundings, being alienated from their own position, being alienated from their people remains a major problem of human existence. Which we will observe through the poetry of Nirala.

मुख्य शब्द : अजनबीपन, निराला, आधुनिक, व्यक्ति, अकेलापन, अभावग्रस्त, एकाकी।
Alienation, Nirala, Modern, Individual, Lonely, Lacking, Lonely.

प्रस्तावना

छायावादी साहित्य में लौकिक जगत और परम अलौकिक सत्ता पर विचार करते हुए मनाव जगत के यथार्थ रूप को प्रमुखता दी गई है। अलगाव की तीव्रतम कटु अनुभूति आधुनिक काल के छायावादी साहित्य में दृष्टिगत होता है, और इस कड़ी में निराला की रचनाएँ हिंदी साहित्य जगत में मिसाल है।

शोध–प्रकिया

विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यायित शोध विधि पर आधारित शोध–आलेख है।

अध्ययन का उद्देश्य

आधुनिक सभ्यता ने हर आदमी को दूसरे आदमी के लिए अजनबी बना दिया है। आधुनिक जीवन की भागम–भाग और आने वाले भविष्य की आर्थिक एवं तमाम तरह की चिंताओं ने हमें अपने आस–पास, अपने लोगों से दूर कर हमें उनसे अजनबी बना दिया है। अत: निराला के काव्य के द्वारा अजनबीपन को समझने की चेष्टा की गई है कि किस तरह यह अकेलापन हमारे जीवन में परिवेश कर रहा है ? इसके लिए और किन–किन शब्दों का प्रयोग किया गया है।

साहित्यावलोकन

अजनबीपन अंग्रेजी के पर्यावाची शब्द 'एलियनेशन' (Alienation) का हिंदी रूपान्तर है। हिंदी में इस शब्द के लिए कई शब्द प्रचलित है–अजनबीयत, परायापन, एकाकीपन, बेगानापन, विलगाव, उखड़ापन इत्यादि। आधुनिक सभ्यता ने हर आदमी को दूसरे आदमी के लिए अजनबी बना दिया है। अजनबीपन का कोई निश्चित रूप नहीं है। यह स्थिति, परिस्थिति एवं सन्दर्भ पर निर्भर करता है कि व्यक्ति को किस तरह अजनबीपन का शिकार होना पड़ता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में ईश्वर से अलगाव, सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्रों सामाजिक आर्थिक व्यवस्थागत मूल्यगत कर्मगत व्यवस्थागत, अन्य लोगों से अलगाव स्वयं के श्रम

एवं उसके उत्पादन से अलगाव, निरर्थक जीवन बोध के रूप में अजनबीपन एवं स्वयं के अस्तित्व के प्रति असुरक्षा एवं निजी व्यक्तित्व के वैशिष्ट्य से अजनबीयत एवं स्व अलगाव जैसे कितने प्रकार एवं उसके विभिन्न स्तर हो सकते हैं। इस अजनबीपन के विषय पर चिन्तकों ने कितने ही भेद – प्रभेद किये हैं। आधुनिक अर्थव्यवस्था की जटिलता तथा आधुनिकता के अनेक मुखौटों में आदमी की पहचान ही खो गयी है। अपनों में अपनेपन का अभाव प्रत्येक मनुष्य को अकेला और नीरस जीवन जीने के लिए विवश कर रहा है। व्यक्ति अपनी असीम महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए अपने वर्तमान परिवेश से कटकर ही आगे बढ़ते हैं। अपने परिवेश अपने लोगों से कटकर अकेला हो जाना मानवीय अस्तित्व की मुलभूत समस्या है। इस समस्या का अवलोकन विभन्न दर्शन के माध्यम से किया जा सकता है।

विषय विस्तार

वसंत–पंचमी के दिन 1899 में मेदिनीपुर जिले के महिषादल में जन्मे निराला का बचपन दुःखों, एवं अभावों से परिपूर्ण संघर्षशील था। बाल्यकाल में ही माँ का देहांत हो जाने के कारण उन्हें माँ के प्रेम से वंचित होना पड़ा। युवावस्था में पहुंचते ही पिता की मृत्यु हो जाने पर वह आर्थिक रूप से कमजोर एवं एकाकी हो गये। एकाकीपन शब्द अपने भीतर विभिन्न अर्थों को समेटे हुये है। इस शब्द का बोध होने पर व्यक्ति खुद को अकेला अनुभव करने लगता है, और इस अकेलेपन के भाव के कारण उसके व्यवस्थित जीवन में उथल–पुथल मच जाती है। इस अकेलेपन की अवस्था पर प्रकाश डालते हुए डॉ. सुरेन्द्र मोहन खोसला लिखते हैं कि "अकेलापन समाज से सम्पर्क विहीन होने की स्थिति है यह सही रूपों में न समझे जाने की पीड़ा से उद्भूत अलगाव संबंधी भाव है। समाज में रहता हुआ व्यक्ति स्वयं समाज में अकेला पड़ गया अनुभव करता है। अथवा अकेला रहना उसकी पसंद बन जाती है। इस प्रकार अकेलेपन के दो रूप हैं... परिस्थितिजन्य एवं स्वभावगत अकेलापन। परिस्थितिजन्य अकेलापन व्यक्ति की विवशता है, जबकि स्वभावगत अकेलापन उसका चयन।"[1]

इस तरह निराला के जीवन में अकेलापन उनके द्वारा चयनित नहीं था अपितु नियति द्वारा प्रदत्त परिस्थितिजन्य अकेलापन था। अभाग्यवश विवाह होने कुछ वर्ष उपरांत ही महामारी के चपेट में आने के कारण उनकी पत्नी मनोहरा देवी की मृत्यु हो गयी। इस तरह शैशव काल से ही वे जीवन–रण में जुझते रहे और एक–एक करके अपनों के अपनत्व से वंचित होते रहें, बेटी के असमय मृत्यु ने तो उनकी कमर तोड़ दी। फलतः अपने जीवन के इस भयंकर संघातों के दुखों को निराला ने अपने काव्य में मूर्त किया।

दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही –सरोज स्मृति।[2]

इस तरह 'अलगाव' के नितांत सामाजिक भौतिक रूप को छायावादी कवियों में निराला ने भोगा था। पुत्री सरोज की असामयिक मृत्यु ने उन्हें भीतर से तोड़ दिया था। जिसका कारण वें सामाजिक कुरीतियों को मानते हैं। 'सरोज स्मृति' में उन्होंने बहुत ही कड़े एवं साफ शब्दों में अपने भीतरी शोक–संतप्त अलगाव के साथ अलगाव को उत्पन करने वाली परिस्थितियों एवं उससे सम्बन्धित उत्तरदायी वर्ग–विशेष की मानसिकता को उद्घाटित किया है। इस शोकगीत के द्वारा निराला ने अपने अभावग्रस्त जीवन के यथार्थ का वास्तविक चित्रण किया है। इस चित्रण में क्रोध एवं करुणा, व्यंग, आशा–निराशा एवं संघर्ष तथा पराजय का ऐसा सम्मिलित रूप है, इस प्रकार निराला की अजनबीयत उनकी व्यष्टि की सीमाएँ लांघकर शीघ्र ही समष्टि–बोध का रूप अख्तियार कर लेता है।

मानवीय अनुभूतियों के सम्वेदनशील कवि निराला को अनवरत संघर्ष, सत्य, शिव, आशा, क्रान्ति, जागरण एवं वैराट्य के महाकवि के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान की गई गई। बेटी के निधन से आहत मन जीवन–मृत्यु, लौकिक–अलौकिक एवं परम तत्व– जीव जगत प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को भलीभांति जानने वाले पिता के आखों से आंसू बहते दिखते हैं "धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,

कुछ भी तेरे हित न कर सका !
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित–काय
लखकर अनर्थ पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ दृसमर।"[3]

आर्थिक विपन्नता के कारण वे खुद को निरर्थक पिता मानते है। यहाँ पर निरर्थक का शाब्दिक अर्थ विशेषण व्यर्थता एवं अर्थहीनता दोनों ही रूपों में दिखाई पड़ता है। इस तरह एक के बाद एक अपनों का इस लौकिक जगत से चले जाना उनके जीवन में एकाकीपन ले आता है। और यही एकाकीपन मानव को अजनबीपन का बोध कराता है। इस सन्दर्भ में दूधनाथ सिंह लिखते हैं "बाहरी और भीतरी इन दोनों संघातों से लगातार वे अपने रचनात्मक क्षरण को रोकने के प्रयत्न में जीवन–भर लगे हुए दिखाई देते हैं। यह दूसरी बात है कि वे अपनी विराट प्रतिभा, वाग्मिता और काव्य–उर्जस्विता को टूटने से बहुत कुछ बचा ले जाते हैं, लेकिन इन बहुत सारे फ्रन्ट्स पर लगातार अपराजेय भाव से लड़ते रहने के कारण उनके मन की उर्वर भूमि में कहीं एक निरन्तर–कटाव शुरू हो गया है।"4.

निराला अपने जीवन के शुरूआती दौर में भारतीय दर्शन के प्रति जिज्ञासु थे। उन्होंने वेद, पुराण, उपनिषद गीता महाभारत रामायण सभी भारतीय धर्म गंथों का अध्यन किया था। निराला अद्वैतवादी दार्शनिक हैं। प्रारम्भिक जीवन के कटु अनुभवों और वीभत्स आघातों की पीड़ा सहने के बाद वे विवेकानंद की ओर आकृष्ट हुए, साथ ही उनके व्यक्तित्व पर स्वामीदयानंद एवं राजाराम मोहन राय के विचार का प्रभाव परिलक्षित होता है। जिसका प्रत्यक्ष अवलोकन हम उनकी रचनाओं में करते हैं उनकी कृतियों में तमाम सामाजिक विसंगतियों धार्मिक–पाखण्डों, चली आ रही रुढियों का विरोध, और संकीर्ण मानसिकता का के खिलाफ अभिवक्ति हुई है। इस तरह सभी प्रभावों को ग्रहण करने के बावजूद निराला एक सर्वथा मौलिक तथा अपने ढंग के अद्वितीय व्यक्ति एवं उत्कृष्ट रचनाकार हैं।

निराला की रचनाओं में भारत के अभावग्रस्त गरीब असहाय आम जनता के सुखों–दुखों उनकी आशा आकाक्षाओं, स्वप्नों एवं उनके उत्पीडन का यथार्थ चित्रण मिलता है। शोषक प्रवृति के उन्नायक निष्ठुर पूंजीपति के शोषणकारी नीतियों के शिकार पात्र अपने आपकों इस व्यवस्थित समाज से कटा हुआ महसूस करते है। जिनके आन्तरिक अनुभूतियों को निराला अपनी कृतियों में अभिव्यक्त किया है उनके प्रतिरोध को निराला ने अपने काव्य का विषय बनाया है।

'तोड़ती पत्थर' काव्य निराला की करुणामूलक प्रतिरोध है द्य इसमें कवि ने पत्थर तोड़ने वाली उपेक्षित वर्ग की नारी का करुण दशा का चित्रण किया है

"वह तोड़ती पत्थर.....
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बंध यौवन,
तन नयन, प्रिय–कर्म–रत मन
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहार–
सामने तरु–मालिका अट्टालिका।"[5]

निराला ने अपने काव्य के माध्यम से उस यथार्थ के अलगाव का बोध कराया जहाँ मनुष्य इस देश का नागरिक होकर भी नाना प्रकार की विषमताओं से जूझ रहा है, आर्थिक अभावों से जूझ रहा है, परायेपन से जूझ रहा है। वह व्यक्ति की आर्थिक अलगाव की वीभत्सता का चित्रण अपनी भिक्षुक कविता में करते हैं–

वह आता –
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर
पेट–पीठ, दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक–
मुटठीभर दाने को भूख मिटाने को
मुँह–फटी पुरानी झोली को फैलाता
वह आता–[6]

इस प्रकार निराला का काव्य के द्वारा मूल्यहीन दिखावटी समाज के भीतर आर्थिक विपन्नता से जूझ रहे विवश व्यक्ति के आर्थिक अजनबीपन से उत्पन उसकी दारुण हीन स्थिति का चित्रण है।

पाश्चात्य विद्वान सीमन अपने (आन द मीनिंग आव एलिनेशन) लेख में लिखते है कि अजनबीयत के मूल में "असमर्थता व विवशता की भावना है, जिसमें क्रमशरू सामाजिक जीवन की अर्थहीनता व आदर्शहीनता उजागर होती है और मूल्यगत खोखलेपन का अनुभव होता है, जो धीरे–धीरे सामाजिक जीवन की उदासीनता और अलगाव में बदलकर मनुष्य के जीवन को एकाकीपन और अजनबीपन की भावना से भर देता है।"[7]

निराला ताउम्र आर्थिक संकट से जुझते रहें। उन्होंने अपने जीवन में विकट आर्थिक संघर्षों का अनुभव किया था, साहित्य के स्तर पर अपने विरोधियों से संघर्ष, दैवी एवं घटनाओं के विरुद्ध प्रतिरोध उनके संघर्षशील जीवन की व्याख्या है। निराला के समान किसी अन्य हिंदी कवि को ऐसा वज्राघात सहने का दुर्भाग्य नहीं हुआ। पारिवारिक जीवन हो या साहित्य का क्षेत्र हर जगह निराशा ही हाथ लगी। काव्य में मुक्तक छन्द की प्रतिष्ठा करने के कारण उनकी कविता पुराने साहित्यिकों के द्वारा नकार दी गई। उनके काव्य की निंदा की गई, उसका उपहास किया गया। इस तरह के वातावरण में कवि खुद को क्षुब्ध हारा हुआ पाता है और अपनी मानसिक टूटन एवं विकलता की अभिव्यक्ति अपनी कविता में करता है :–

हो गया व्यर्थ जीवन,
मैं रण में गया हार।
सोचा न कभी,
अपने भविष्य की रचना पर चल रहे सभी,
इस तरह बहुत कुछ
आया निज इच्छित स्थल पर
बैठा एकांत देखकर
मर्माहत स्वर भर !"[8]

इस तरह सामाजिक थपेड़ों से आहत कवि हृदय निराशा और अवसाद की भावना से ग्रसित हो जाता है। निरन्तर उपेक्षा, निंदा कुंठा और भर्त्सना की विभीषिका के साथ अर्थ कृच्छता को सहन करते–करते उसका व्यक्तित्व खंडित हो गया। जिस हिंदी की प्रतिष्ठा के लिए निराला गाँधी, नेहरु से लड़ गये थे उसी हिंदी समाज ने उनके जीते जी उन्हें उपेक्षित जीवन जीने के लिए छोड़ दिया था। निराला का व्यक्तित्व आरम्भ से ही असमान्य असाधारण था। अपने अनर्गल प्रलाप एवं अपशब्दों की झड़ी से वे अपने दर्शनार्थियों को चौंका देते थे। वह सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ अपने स्वर मुखर करते हैं। उनका मानना था कि समाज का एक वर्ग अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं हो पा रहा है इसलिए की वह कहीं न कहीं नियतिवादी स्थितियों में है। वह आम जन को भी इस सामाजिक दुरव्यवस्थाओं को अपनी नियति मानने से मना करते हैं। यह जो सामाजिकता और प्रशासनिक दुरव्यवस्था है, धार्मिक और दार्शनिक व्यवस्था है उसने इस तरह से लोगों को बाँट दिया है, जिसमे लोंग छोटे बड़े के रूप में, आमिर गरीब के रूप में और छुत–अछूत की अवधारणाओं में लिप्त वह अपने तमाम अधिकारों से वंचित हो रहा है। आदमी, और आदमी को सहने के लिए बाध्य है तो ये जो सहने की बाध्यता है वह भी एक तरह से स्वयं की चेतना से परे हटना है। इस तरह से मनुष्य संचेतन नहीं हो पा रहा है। अत: निराला का काव्य इन तमाम विसंगतियों के विद्रोह का स्वर है।

अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पायी खुशबू, रंगोआब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है कैपीटलिस्ट। [9]

इस तरह निराला का विद्रोही स्वर अत्यंत सशक्त होकर हिंदी काव्य में उतरा है। जिसके कारण कुछ श्रद्धालु काव्य प्रेमियों ने उन्हें अवधूत घोषित किया, तो किसी ने महामानव घोषित किया।

निष्कर्ष

इस प्रकार हमने देखा कि निराला के व्यक्तिगत जीवन और उनके रचनात्मक जगत के वर्ण विषय पर यदि ध्यान दे तो हम देखते हैं कि यह अजनबीपन निराला के दोनों जगत में अपना स्थान रखते हैं। उनकी व्यक्तिगत

जीवन का गहराता हुआ संघात आर्थिक अभाव, सम्बन्धों का विलगाव उनकी मानसिकता को विछिन्न करता है, लेकिन उनकी यह विछिन्नता उनकी दुर्बलता न होकर बल्कि उनकी सृजन शक्ति का श्रोत बनता है। अत: यही कारण है कि समाज और व्यवस्था के द्वारा निराला के साथ किया जाने वाला अन्याय जनता के साथ होने वाले अन्याय में विलयित हो जाता है और रचनाधर्मिता के स्तर पर पहुँचकर निराला पारम्परित रचनाधर्मिता से कट जाते हैं, तथा मयशैली के द्वारा जो भावाव्यंजन करते हैं वे रूढ़वादीयों से स्वीकृत नहीं हो पाती, फिर भी निराला अपनी रचनाधर्मिता से अपने को हटा नहीं पाते हैं, जिसके कारण वर्ण विषय, रचनाशैली, छंद, एवं भावाभिव्यक्ति के तेवर को नये रूप में ग्रहण करते हैं, और विरोध के बावजूद प्रतिष्ठित होते हैं। इस प्रकार निराला का व्यक्तिगत जीवन सम्बन्धी और रचनात्मक जीवन सम्बन्धी अजनबीपन रचनात्मक हो जाता है, जिसमें हर प्रकार से उनका अपनापन दिखाई देता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. सुरेन्द्र मोहन खोसला, हिंदी कहानी में व्यक्तित्व विघटन स्वरूप एवं विश्लेषण, पब्लिकेशन ब्यूरों, पंजाब युनिवर्सिटी, चंडीगढ़, पृ.61*
2. *निराला,सं.नंदकिशोर नवल– निराला रचनावली खंड 1. पृ.324*
3. *निराला, स नंदकिशोर नवल–निराला रचनावली खंड 1. पृ.343)*
4. *दूधनाथ सिंह, निराला आत्महन्ता आस्था,लोकभारतीय प्रकाशन, पृ. 51*
5. *राजकुमार सैनी, साहित्यस्रष्टा,अरुणोदय प्रकाशन दिल्ली, पृ.130*
6. *मतवाला साप्ताहिक,कलकत्ता 17 नवम्बर 1923*
7. *डॉ. विद्याशंकर राय, आधुनिक हिंदी उपन्यास और अजनबीपन,सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, 1981 पृ.12*
8. *निराला जीवन और साहित्य, पृ. 177*
9. *निराला विशेषांक, सम्मेलन पत्रिका,पृ.134*